महर्षि अरविंदो के दर्शन में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद एवं स्वराज्य

डॉ ममता यादव*

अरविंदो के दर्शन में जिस राष्ट्रवाद का उल्लेख है वह मूलरूप से आध्यात्मिकता पर आधारित है। अरविन्दो के अनुसार मानव एकता के आदर्श को यह स्वीकार करना चाहिए कि आध्यात्मवाद ही इकलौता सुरक्षा कवच है तथा राजनैतिक रूप से महान बनने और उन्मुक्ति प्राप्त करने हेतु महान और उन्मुक्त होना आवश्यक है। महर्षि अरविन्दो ने राष्ट्र और राष्ट्रीयता की संकल्पना को एक वृहद दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके अनुसार राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक बल है जो सदैव विद्यमान रहती है और इसमें किसी प्रकार का क्षरण नहीं होता। अरविन्दो राष्ट्रवाद को ही सच्चा धर्म मानते थे और राजनीतिक स्वतन्त्रता को ईश्वरीय कार्य की संज्ञा देते है।

अरविन्दो का कथन है राष्ट्रवाद महज एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म है, जिसका स्रोत ईश्वर है। अरविन्दो आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को 'आदर्श राज्य' के रूप में प्रस्तुत करते है और यही आदर्श राज्य स्वराज का रूप लेता है। महर्षि अरविन्दो का लक्ष्य था एक आदर्श आध्यात्मिक समाज कि स्थापना करना उनका मानना था कि एक पूर्ण समाज अपूर्ण व्यक्तियों द्वारा नहीं बन सकता और बिना आध्यात्म के व्यक्ति कि पूर्णता सम्भव नहीं है। यही कारण है कि अरविन्दो ने 'धर्म' को ही भारतीय लोकतन्त्र का मूल बताया जिसे पूरे भारत को एकता के सूत्र में बाँधने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। महर्षि अरविन्दो के इन्हीं विचारों कि विस्तृत चर्चा हम अपने शोध पत्र में प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। "सरकार और समाज की मशीनरी के प्रयोग से अपने परिवेश को बेहतर बनाने एवं स्वप्न देख रहें मनुष्यों की यह पापमय स्पर्धा व्यर्थ हैं, क्योंकि बाह्य परिवेश को सुधरने के लिए अन्तरात्मा की शुद्धता आवश्यक है।" अरविन्दो घोष का यह कथन उनके व्यक्तित्व का परिचय सहज रूप में देता है। महान् राष्ट्रवादी, दार्शनिक एवं रहस्यवादी तथा आध्यात्मिक तौर पर एकीकृत और राजनीति से मुक्त, मानवता के आकांक्षी श्री अरविंदो घोष, बीसवीं सदी के महानतम् संतों में से एक 'रहस्यमयी योगी' के तौर पर विख्यात श्री अरविंदो ने भारत के समग्र पुनरूत्थान एवं मानव जाति के समग्र परिवर्तन का दोहरा आदर्श प्रस्तुत किया, जो उनके व्यक्तित्व एवं कृतत्व की परिपक्कता को प्रदर्शित करता है। राजनीति और आध्यात्मिकता के बीच यह पारस्परिक संबद्धता, विभिन्न उपभेदों को समृद्धि एवं गतिशीलता के संकलन की ओर आकृष्ट करने के श्री अरविंदो की क्षमता का प्रतीक है। उन्होंने राजनीति और योग को एकीकृत करने के साथ–साथ पाश्चात्य एवं भारतीय मूल्यों को भी एकीकृत किया। उनके अंदर विविधताओं को समाहित करने की क्षमता, उनके निजी जीवन की विविधताओं से प्रेरित थी।

अरविंदो ने जिस राष्ट्रवाद कि बात कि उसमें किसी प्रकार का द्वेष, खिन्नता, कड़वाहट या आक्रमकता नहीं है। अरविंदो के अनुसार आध्यात्मिकता पर आधारित "मानव एकता के आदर्श" को यह बात स्वीकार करनी चाहिए कि "आध्यात्मवाद" ही इकलौता सुरक्षा कवच है तथा राजनीतिक रूप से महान् बनने और उन्मुक्ति प्राप्त करने के लिए दिल से महान और उन्मुक्त होना आवश्यक है। अरविंदो स्वराज हेतु सेवा और आत्मबलिदान की आवश्यकता को अनिवार्य मानते थे। वास्तव में श्री अरविंदो के व्यक्तित्व में योगी, कवि और दार्शनिक, तीनों का समन्वय था, वे सबके सब एक ही लक्ष्य की ओर गतिशील थे। इसलिए अरविन्दो का ध्यान करते समय ऐसा आभास होता है, मानो हम मानवता के महासूर्य को देख रहे हों। अरविंदो मात्र कवि और दार्शनिक ही नही अपितु उनकी सबसे बड़ी पहचान एक योगी के रूप में थी। उनके दर्शन, उनके विचारों में जो शक्ति दृष्टिगोचित होती है और उनके भीतर जो प्रमाणिकता है वह निःसंदेह योग से ही प्राप्त होती है। योग के बल से ही उन्होंने सत्य को देखा और योग के बल से सही उन्हें यह शक्ति प्राप्त हुई कि उस सत्य को वे भाषा मे अभिव्यक्त कर सकें।

भौतिकतावाद के प्रणेता मार्क्स ने आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नही किया क्योंकि आत्मा विज्ञान की प्रयोगशाला में प्रमाणित नही की जा सकती। श्री अरविंदो ने आत्मा के साथ मैटर को भी स्वीकार किया और मनुष्य को यह बताया कि तुम यद्यपि प्रकृति के अब तक के निर्माणों मे सबसे श्रेष्ठ हो, किन्तु विकास के क्रम मे तुमने अभी आधी दूरी भी तय नही की है। मन तुम्हारा सबसे बड़ा यंत्र है, किन्तु इससे भी सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम यन्त्रों की सम्भावनाएँ तुम्हारे भीतर छिपी हुई है। तुम्हें चाहिए कि तुम मन के धरातल से ऊपर आने का प्रयास करो और उन शक्तियों को प्राप्त करो, जो मन की सीमा से परे तुम्हारा इन्तजार कर रही हैं।

*एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ।

इर्विन ने मानव से उसका देवत्व छीन लिया था। फ्रॉयड ने बताया कि आदमी करता तो वही काम है, जिसे वह करना चाहता है, किन्तु वह करना क्या चाहेगा, इस पर उसका अधिकार नही है। इस प्रकार मनुष्य अपने देवत्व और स्वाधीनता, दोनों के विषय में संदिग्ध हो गया था। अरविंदो मनुष्य को यह आशा दिला गए है कि मनुष्य देवता भी बन सकता और स्वाधीन भी हो सकता है।

अरविंदो ने कभी व्यक्तिक मोक्ष को परम ध्येय नहीं माना। उनका परम ध्येय अतिमानसी चेतना को उतारकर सम्पूर्ण मानव जाति का आध्यात्मिकरण है, मनुष्य को उठाकर तिमानसी चेतना के धरातल पर ले जाना है और चेतना के आकाश में मनुष्य ऊपर कैसे उठे, कैसे उसे अतिमानसी अवस्था की प्राप्ती हो इसके लिए अरविन्दो ने पूर्ण योग का मार्ग निर्धारित किया।

महर्षि अरविंदो भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। महर्षि एक क्रांतिकारी प्रतिभा सम्पन्न आध्यात्मिक नेता थे। जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय स्वातंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा किया। महर्षि अरविंदो श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद्, रामायण एवं महाभारत में प्रस्तुत आदर्शों एवं व्यक्तियों से बहुत प्रभावित थे और अपने विचारों में इन ग्रन्थो में व्यक्त आदर्शों को महत्त्वपूर्ण स्थान देते थे। महर्षि अरविन्दो ने राष्ट्रीयता की संकल्पना को एक वृहद दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके अनुसार राष्ट्रीयता एक आध्यात्मिक बल है जो सदैव विद्यमान रहता है और उसमें किसी प्रकार का क्षरण नही होता। अरविंदो ने आध्यात्मिक क्रांति का अनुसरण किया। उनका कार्य नैतिकता एवं आध्यात्मिकताा। उनका यह कार्य मूलतः तीन दार्शनिक अवधारणाओं पर आधारित था। अर्थात 'परम् सत्ता', 'परम् सत्ता की गत्यात्मक अभिव्यक्ति' अर्थात् 'सत्य का बोध' एवं 'क्रमागत उन्नति'।

अरविंदो ने वेदान्त के सिद्धान्त की व्याख्या के संदर्भ में उनकी अवधारणा इस बात पर आधारित थी कि "ब्रह्म ही सर्वस्व है।" हमारी इंद्रियाँ की पूरी दुनिया–ब्रह्म में एकाकार हो जाती है। यही बात उनके दर्शन की बुनियाद थी। मानवता के पीछे ब्रह्म का विचार था। हालाँकि मनुष्य का जन्म इस भौतिक संसार में हुआ है, परंतु मानवता को व्यक्त करने वाले विचारों को वास्तविक अर्थो में मूर्त रूप देना ही उसका उद्देश्य है। मनुष्य के भीतर ब्रह्म के साथ एकाकर होने का साधन मौजूद है। यदि मनुष्य का मन अपनी इंद्रियों को नियंत्रित कर ले, तो उसे अहसास होगा कि ब्रह्म भौतिक जगत से परे भी उसका मार्गदर्शन कर रहें है। व्यक्ति का आत्मबोध या आध्यात्मिक पूर्णतः उसके अस्तित्व का उद्देश्य है, और यह तभी संभव है जब व्यक्ति भौतिकता के स्तर से ऊपर उठ जाए। सभी के मन को संचालित करने वाले, अर्थात् ब्रह्म के साथ एकाकर होने के भाव को इस प्रकार उत्कृष्टता से ही महसूस किया जा सकता है।

मानवता के मूल विचार के रूप में ब्रह्म का तात्पर्य है कि मनुष्य जाति का प्रत्येक सदस्य अपनी स्वतंत्रता को समान रूप से साझा कर सकता है और प्रत्येक मनुष्य अन्य सभी मनुष्यों से जैविक रूप से संबंधित है। आनन्द या प्रसन्नता ब्रह्म को संदर्भित करता है। यही सर्वव्यापी वास्तविकता है जो ब्रह्मांड का आधार है और आत्म–अभिव्यक्ति के उद्देश्य से अस्तित्व में है। आनन्द की स्थिति में यह स्पष्ट तौर पर उस आनन्द को साझा करता है। प्रसन्नता या परमानंद क्रमागत उन्नति के हर सवाल का जवाब है।

अरविन्दो ने पाश्चात्य एवं प्राच्य दोनों ही विचार–धाराओं का समन्वय प्रस्तुत किया है। वे राष्ट्रवाद को ही सच्चा धर्म मानते है और राजनीतिक स्वतंत्रता को ईश्वरीय कार्य की संज्ञा देते है। भारत राष्ट्र सम्बन्धी उनके विचार केवल भारत की स्वतन्त्रता तक ही सीमित नहीं। वे भारत की स्वतंत्रता में समस्त विश्व की नैतिक तथा आध्यात्मिक स्वतंत्रता अन्तर्निहित मानते है। अरविन्दो के अनुसार एक स्वतंत्र भारत ही समस्त विश्व का नैतिक तथा आध्यात्मिक जागरण करा सकता है।

अरविन्दो के अनुसार भारत एक आध्यात्मिक इकाई के साथ–साथ एक भौगोलिक इकाई के रूप में आध्यात्मिक पूर्णता के लिए पूरे विश्व का नेतृत्व कर सकता है। ब्रिटिश राज के काल में भारत परतंत्र था, इसलिए उस समय में राष्ट्रवाद एक आध्यात्मिक साधना या एक नैतिक प्रयास था। अरविन्दो ने कहा था "राष्ट्रवाद महज एक राजनीतिक कार्यक्रम नही है, बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म है, जिसका स्रोत ईश्वर है।"

अरविन्दो के लिए भारत की दासत्व–मुक्ति मानवता के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के तौर पर उसकी नियति के लिए अनिवार्य था और भारत को मानवता के आध्यात्मिक उत्थान में प्राथमिक भूमिका निभानी चाहिए। भारत को उपनी नियति के अनुसार पूर्वनिश्चित कार्यो को पूरा करने के लिए स्वराज की आवश्यकता है, राजनैतिक और आध्यात्मिक आन्दोलन के रूप में राष्ट्रीय आन्दोलन की सफलता भारत के लिए आवश्यक है साथ ही यह पश्चिम जगत के हेतु और अधिक आवश्यक है। पूरा विश्व भारत को स्वतंत्र देखने के लिए लालायित है, ताकि भारत अपनी

वास्तविक स्थिति को प्राप्त कर सके।

मानवता को केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता के माध्यम से हासिल नही किया जा सकता, जो मानव जाति के आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में भारत की भूमिका को दोबारा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। स्वराज आधुनिक परिस्थितियों में भारत के प्राचीन जीवन की प्राप्ति है, राष्ट्रीय महानता के सतयुग की वापसी है, शिक्षक और मार्गदर्शक के तौर पर उसकी भूमिका का पुनारम्भ है। राजनीति में वेदांत आदर्श की अंततः प्राप्ति के लिए लोगों की आत्म–मुक्ति है, यही भारत के लिए वास्तविक स्वराज्य है।

अरविंदो के लिए राष्ट्रवाद एक धार्मिक गतिविधि है। निष्क्रिय रूप से विचारमग्न जीवन के अर्थ में धर्म नहीं है, बल्कि यह धर्म का एक सक्रिय स्वरूप है। कभी–कभी एक राजनीतिक आंदोलन के सांदृश प्रतीत होने वाला राष्ट्रवादी आंदोलन वास्तव में एक धार्मिक आंदोलन है और इसमें भावनाओं के हथियार का इस्तेमाल किया जाता है। इसका धर्म "विश्वास एवं आशा का सिद्धान्त है, विश्वास, प्रेम और ज्ञान का एक धर्म"। यह एक प्रकार से धार्मिक आकांक्षा और नैतिक मनोभाव हैं।

अरविंदो ने स्वराज के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा– spirituality is India's only politics and the fulfillment at the Sanatana Dharma is only Swaraj Aurbindo Ghosh. अरविंदो के अनुसार आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में दमन का सर्वथा निषेध है चाहे वह राष्ट्र के अन्तर्गत व्यक्ति का दमन हो अथवा साम्राज्य या उपनिवेश के रूप में किसी अन्य राष्ट्र का दमन हो। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में राष्ट्र का कोई भी अंग व्याधिग्रस्त अथवा त्याज्य अथवा साधन मात्र नही माना जा सकता, किसी भी वर्ग को पीछे नही छोड़ा जा सकता। सभी सदस्यों को पूर्ण स्वतंत्रता, पूर्ण एकता और पूर्ण समन्वय के जीवन की ओर आगे बढ़ाया जाता है, क्योंकि ये ही आध्यात्मिक राष्ट्र के जीवन के प्रतीक हैं। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में राष्ट्र की भौतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, धार्मिक, नैतिक और बौद्धिक सभी प्रकार की प्रगति आवश्यक मानी जाती है। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का लक्ष्य राष्ट्र का सर्वांगिण विकास है। उसमें यह मान्यता काम करती है कि समष्टि में प्रत्येक इकाई को अपने स्वधर्म का पालन करना चाहिए इसी में अपना और इसी में राष्ट्र का हित है। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में राष्ट्रीय अहम् नहीं बल्कि राष्ट्र आत्मा ही सद्वस्तु मानी जाती है। श्री अरविंदो के शब्दों में, "एक आध्यात्मिक कृत समाज ठीक अपने आध्यात्मिक व्यक्तियों के समान ही अहम् में नही बल्कि आत्मा में निवास करेगा। एक समूह अहम् के रूप में नही बल्कि सामूहिक आत्मा के रूप में अस्तित्व रखेगा। इस प्रकार के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में संत से लेकर अपराधी तक किसी भी व्यक्ति को बलपूर्वक ठोक–पीटकर, कानून तथा पुलिस के दबाव में बदलने की कोशिश नही की जाती, बल्कि उनमें आन्तरिक परिवर्तन किया जाता है। आर्थिक क्षेत्र में इसका उद्देश्य उत्पादन का विशाल यन्त्र निर्माण करना नहीं बल्कि एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना होता है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को उसकी प्रकृति के अनुसार कार्य मिलें। राजनीति क्षेत्र में नागरिक को राज्य का दास अथवा यन्त्र नहीं बनाया जाता है, बल्कि राज्य और व्यक्ति में दोनों के सर्वांगिण विकास के लिए समन्वय स्थापित किया जाता है। अन्तर्राज्यीय क्षेत्र में आध्यात्मिक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों से युद्ध नही छेड़ता बल्कि उन्हें उनकी आत्मा के साक्षात्कार में सहायता देता है और इसके ऐवज में कोई स्वार्थ सिद्धि नही चाहता। आंतरिक और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में सब कहीं स्वतंत्रता आध्यात्मिक राष्ट्र का नियम है।

"कारण एक पूर्व तथा आध्यात्मिक समाज वह होगा जिसमें जैसा कि एक आध्यात्मिक अराजकतावादी स्वप्न देखता हैं, सब मनुष्य गहरे रूप में स्वतंत्र होंगे और ऐसा इसलिए होगा क्योंकि प्राथमिक शर्तें पूरी हो चुकी होंगी। उस अवस्था में सब मनुष्य स्वयं अपने लिए विधान नही बल्कि विशेष विधान अर्थात 'दिव्य विधान' होगा। कारण वह भगवान में निवास करने वाली एक आत्मा होगा, एक ऐसा भाव नहीं जो यदि पूर्णतया नहीं तो प्रधानता अपने हित और स्वार्थ के लिए जीवित रहता है। उसका जीवन उसकी अपनी दिव्य अहम् मुक्ति प्रकृति के नियमों से संचालित होती है।

इस प्रकार के आध्यात्मिक राष्ट्र की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र में पहले कुछ व्यक्तियों में तत्पश्चात् सम्पूर्ण जन समुदाय में आध्यात्मिक राष्ट्र का निर्माण कर सकते है। वास्तव में श्री अरविंदो के अनुसार आध्यात्मिक राष्ट्र बनना प्रत्येक राष्ट्र का लक्ष्य हैं। इसमें ही इसके सदस्यों का राष्ट्र का कल्याण निहित हैं।

श्री अरविंदो के अनुसार "आदर्श समाज या आदर्श राज्य वह होता है जिसमें व्यक्ति की पूर्णता के लिए उसकी वैयक्तिक स्वाधीनता और स्वतंत्र विकास को भी उतना ही महत्त्व दिया जाता है। जितना कि समिति समिष्टि, समाज या राष्ट्र की आवश्यकताओं अर्थात निपुणता, एकता, स्वाभाविक प्रगति और आभ्यांतरिक पूर्णता को दिया जाता है। इसी प्रकार समस्त मनुष्य जाति के आर्दश समुदाय, अंतर्राष्ट्रीय समाज या राज्य में भी राष्ट्रीय स्वाधीनता

और संयुक्त प्रगति एवं पूर्णता के साथ उत्तरोत्तर संगति प्राप्त करें जाने चाहिए।"

महर्षि अरविंदो आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को आदर्श राज्य के रूप में प्रस्तुत करते है और यही आदर्श राज्य 'स्वराज्य' का रूप लेता है। श्री अरविंदो के शब्दों में–"मनुष्य जाति का संयुक्त विकास व्यक्ति–व्यक्ति के बीच, व्यक्ति और समुदाय के बीच, समुदाय और समुदाय के बीच, छोटे जन समाज और समूची मनुष्य जाति के बीच, मनुष्य जाति के सामान्य जीवन और उसकी चेतना के बीच तथा उसके स्वतंत्र रूप में विकसित होते हुए सामाजिक एवं व्यक्तिगत अंगो के बीच आदान–प्रदान एवं आत्मसातकरण के सामान्य सिद्धान्त द्वारा सिद्ध किया जायेगा।

श्री अरविंदो एक प्रखर राष्ट्रवादी थे और उन्होंने अपने विचारों में राष्ट्र का विकास मानव एकता के आदर्श की ओर उन्मुख होना चाहिए इस विचार को भी स्वीकार किया। मानव जाति के विकास में एकता के सिद्धान्त के अतिरिक्त स्वतंत्रता और विभिन्नता का सिद्धान्त भी उतना ही अधिक आवश्यक है क्योंकि परम् तत्व में एकता और अनेकता दोनों ही है। प्रकृति की सामान्य योजना असीम विविधता पर आधारित होती है इसलिए आदर्श समाज में वैयक्तिक, राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक और नैतिक सब प्रकार की स्वाधीनता आवश्यक है। स्वाधीनता का अर्थ स्पष्ट करते हुए श्री अरविंदो ने लिखा है– "स्वाधीनता से हमारा अभिप्राय है अपनी सत्ता के नियम के अनुसार चलना, अपनी स्वाभाविक आत्म परिपूर्णता तक विकसित होना और अपने वातावरण के साथ स्वाभाविक और स्वतंत्र रूप में समरसता प्राप्त करना"। महर्षि अरविन्दो का लक्ष्य था एक आदर्श आध्यात्मिक समाज की स्थापना करना। उनका मानना था कि एक पूर्ण समाज का निर्माण अपूर्ण व्यक्तियों द्वारा नहीं किया जा सकता। श्री अरविंदो को भारत की सांस्कृतिक परम्पराओं और प्राचीन मूल्यों पर बहुत गर्व था, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष को ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध 'धर्म युद्ध' के रूप में प्रस्तुत किया। वह महाभारत और रामायण में वर्णित 'धर्म युद्ध' से प्रेरित थे। जिस प्रकार श्रीमद्भवगत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को धर्म युद्ध करने के लिए प्रेरित किया उसी प्रकार महर्षि अरविंदो ने भी ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध भारतीय को संगठित होकर अपने नैतिक बल द्वारा संघर्ष करने का आवाह्न किया।

श्री अरविन्दों का विचार था कि धर्म ही भारतीय लोकतंत्र का मूल हैं, जिसे पूरे भारत को एकता के सूत्र में बांधने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने भारतीयों को अपने उज्ज्वल भविष्य को प्राप्त करने के लिए अपने सुनहरे अतीत को पुर्नस्थापित करने का आवाह्न किया। श्री अरविन्दो ने कहा –

"Recover their Vedanta, the Gita, the Yoga, Recover her not only in intellect or sentiments in your lives. Difficulty and impossibility will vanish from your vocabularies for it is in the spirit that strength internal and you mus win back the kingdom of yourselves the inner Swaraj before you can win back your outer empire. Recover the source at all strength in your selves and all else will be added to you Social Soundness. Intellcectual pre-imminence political freedom, the maskey at human thought and the hegemony of the world."

श्री अरविन्दो के विचार में स्वराज्य का आदर्श या पूर्ण स्वायत्तता किसी भी विदेशी नियंत्रण से स्वतन्त्रता प्राप्त था। उनके विचार में प्रत्येक राष्ट्र का यह अधिकार था कि वह अपनी प्रकृति अपने आदर्शों और अपनी ऊर्जा के अनुरूप स्वतंत्र जीवन यापन करें। उन्होंने कहा कि भारत की अध्यात्मिकता राजनीति में प्राप्त होती है और 'सनातन धर्म' को पूर्ण रूप से 'स्वराज्य' से ही प्राप्त किया जा सकता।

श्री अरविंदो ने कहा–

"Mother India is not piece of earth. She is power a God head, for all nations have such a Devi, Supporting their Separate existence keeping it in being"

"Finally, Swaraj is not Possible without unity fo Speech of intellectual conviction and the unity of heart that spring from love"

References :

1 Das Manoj (1974) "The Sir Aurobindo Ashram at Pandicheerry", Vivekanand Kendra Patrica prakashan Trust, Chenai.

2 Deutsch, L.Pantham Thames: Edited by(1986), "Political Thought in Modern India", SAGE Publicaticans, New Delhi India, पेज नं० : 198-200.

3 Dinkar, Ramdhari Singh:(2008), "Sir Arvind Meri Drishti Mein" Lok Bharti Prakashan Allahabad, India, पेज नं० : 25

4 Mohapatra,Amulya Ranjan:(2012), "Swaraj: Thoughts of Gandhi, Tilak, Aurobindo, Raja Ram Mohan Ray, Tagore and Vivekanand: Read worthy publications (P.Ltd) NewDelhi, पेज नं० : 52, 53.

5 Verma.V.P:(1971), "Modern Indian Political Thought" Lakshmi Narain Agarwal ,AGRA, पेज नं० : 387.

6 Manav Ekta Ka Adarsh:(1969), Sri Aurobindo SocietyPondicherry, पेज नं० : 07,124-125.